प्रेरितों के कामः कार्य के लिए एक बुलाहट

तीव्र शक्ति द्वारा किया गया कार्य प्रेरितों के कार्य को चारों और फैला देता है! प्रेरितों के काम की पुस्तक यीशु के प्रत्येक अनुयायी को उसकी ओर से कार्य में लगे रहने के लिए एक अतिआवश्यक पुकार है। इस पुस्तक के नाम से ही पता चलता है कि प्रेरितों ने उस कार्य को जिसके लिए प्रभु ने उन्हें शिक्षित किया था तथा आदेश दिया था, पवित्र आत्मा से शक्ति पाकर पूरा किया। कोई भी व्यक्ति जो प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़कर प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करने से चूकता है, वह इस पुस्तक के मुख्य प्रतिबल से चूक जाता है!

कार्य का वायदा किया गया

यीशु ने अपने प्रेरितों को कुछ आदेश दिए थे (देखिए मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:44-47)। उसने पवित्र आत्मा के आने के बारे में भी कुछ वायदे किए थे (यूहन्ना 16:7-14)। फिर वह महिमा पाने के लिए ऊपर उठा लिया गया (प्रेरितों 1:9-11)। जैसे यीशु ने वायदा किया था, उसी के अनुसार पवित्र आत्मा उन बारह प्रेरितों पर उतरा, जिससे उन पर प्रेरिताई के काम की मुहर लग गई थी (प्रेरितों 2:1-4)। ये लोग तुरन्त यरूशलेम में फसह और पिन्तेकुस्त त्यौहारों के लिए एकत्रित हुए लोगों की विभिन्न भाषाओं में जी उठे यीशु के सुसमाचार की सच्चाई का प्रचार करने लगे। यह जानकर कि ये लोग तो अनपढ़ थे, लोगों की भीड़ उन्हें बहुत सी भाषाओं में लगातार बोलते हुए सुनकर हैरान रह गई थी। यहां पर मसीह के लिए परिवर्तित होने की एक बहुत बड़ी शुरुआत हुई। यह इसलिए सम्भव हो सका क्योंकि प्रेरितों ने यीशु की इच्छा को पूरा करते हुए, कार्य किया (प्रेरितों 2:4, 14, 40, 42)।

कार्य का चित्रण

जब परमेश्वर ने प्रेरितों के कार्यों द्वारा मनुष्य जाति के लिए अनुग्रह की शक्ति का संचार किया, तो लोगों ने बड़ी उत्सुकता से उसे स्वीकार कर लिया (प्रेरितों 4:33; इफिसियों 2:8, 9; तीतुस 2:10, 11)। सुसमाचार की ओर परिवर्तित होने वाले लोग भयंकर सताव सहकर भी उसी वक्त लग्न से काम करने वाले बन गए; क्योंकि हर एक मसीही पुरुष

तथा स्त्री ने समझ लिया कि सुसमाचार की शिक्षा देने का दायित्व उनका है (प्रेरितों 8:4)। प्रेरितों के साथ, परिवर्तित होने वाले इन लोगों के अति उत्साही कार्यों से मण्डलियां बड़ी तेज़ी से विकसित होने लगीं।

उस समय के इतिहास को जानने के लिए प्रेरितों के काम नामक पुस्तक हमारे पास एक स्रोत के रूप में है, और इसे हर किसी के लिए अनुग्रह की पेशकश के प्रति आज्ञाकारी होने की पुकार के रूप में जानना चाहिए। हमारे पास प्रेरितों के काम का केवल एक ही दस्तावेज है जिससे पता चलता है कि प्रभु की कलीसिया के प्रारम्भिक तीस वर्षों में किस प्रकार अनुग्रह की पेशकश की गई और इसे स्वीकार किया गया। यह इतिहास की पुस्तक है, जिसमें बताया गया है कि किस प्रकार मसीही लोगों ने मसीह के लिए कार्य किया और किस प्रकार प्रेरितों ने परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार करने के बारे में सिखाया। यह पुस्तक सारे संसार में सुसमाचार का प्रचार करने की मसीही लोगों की तीव्र इच्छा का इतिहास है।

पुस्तक की मूल योजना यह दिखाना है कि जिस काम के लिए यीशु मरा वह पूरा हो गया था। वरना, इतने प्रवचन दर्ज क्यों किए जाते? मनपरिवर्तन की इतनी घटनाएं विस्तार से क्यों लिखी जाती? इसका लेखक लूका प्रेरितों के सुसमाचार प्रचार के काम को इतनी निकटता से क्यों देखता?

प्रेरितों के काम की पुस्तक की योजना यह दिखाने के लिए की गई थी कि आरम्भ में मसीह के साथ किसी का सम्बन्ध कैसा होता है। प्रेरितों के काम में परमेश्वर के प्रकाश को दिखाया गया है। इसमें परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने और उसकी आज्ञा मानने वालों के लिए पापों की क्षमा और स्वर्ग की आशा की परमेश्वर की अन्तिम पेशकश लिखी गई है। यह पुस्तक उन कार्यों को प्रकट करती है जिनसे प्रत्येक पीढ़ी में स्वर्ग का परमेश्वर प्रसन्न होगा।

इतनी धमकियां और सताव सहकर भी, प्रेरित "इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके" (प्रेरितों 5:42)। उन्होंने यह महसूस किया कि कलीसिया को खोए हुओं में उद्धार के शुभसमाचार के प्रचार और सिखाने का एक बहुत बड़ा कार्य सौंपा गया है। कलीसिया के प्रारम्भ तथा उसे अस्तित्व में लाने का कोई और कारण नहीं दिया गया।

प्रेरित लोग जीवित तथा सांस लेने वाली "प्रचार करने की मशीनें" थीं। उन्होंने अपने आपको यीशु के लिए बलिदान की वेदियों पर चढ़ा दिया था और अपने जीवन केवल वही करने के लिए समर्पित कर दिए थे जिसकी यीशु ने उन्हें शिक्षा दी थी, उन्हें करने की शक्ति दी थी और उनसे वह काम करने की इच्छा की थी। यदि कलीसिया के सदस्य प्रेरितों के काम को ठीक तरह से पढ़े, इस पुस्तक के बुनियादी प्रतिबल को समझें, मनपरिवर्तन की कहानियों को सही ढंग से व्यवहार में लाएं और इन मंशाओं को देखें कि परमेश्वर अपने महान कार्य को जारी रखने के लिए उन्हीं पर निर्भर है, तो वे महसूस करेंगे कि आज मसीही लोगों का आलस्य एक आत्मिक अपराध है।

कार्य का प्रस्ताव दिया गया

सारी पुस्तक में ही उन कार्यों की श्रृंखला के स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं जिससे उस समय लोगों का उद्धार हुआ और वही कार्य आज भी हमारे उद्धार का कारण बनते हैं। (1) सच्चाई को जानने वालों, अर्थात प्रेरितों ने इसे दूसरे लोगों को सिखाया; (2) जिन लोगों में इसे सुसमाचार के साथ प्रस्तुत किया गया, उन्होंने इसे सत्य मानकर ग्रहण किया और इस पर विश्वास किया; (3) विश्वासियों ने अपने पापों से मन फिराया; (4) पश्चात्तापी विश्वासियों ने यीशु को मसीह मानकर उस पर विश्वास किया; (5) अंगीकार करने वाले, पश्चात्तापी विश्वासियों को मसीह में बपतिस्मा दिया गया; और (6) बपतिस्मा लेने वाले मसीहियों ने दूसरे लोगों को सुसमाचार सिखाने के अपने दायित्व को स्वीकार किया।

मसीही लोगों को आत्माओं को जीतने के कार्य में लगना चाहिए, परन्तु आज बहुत सी मण्डलियों में इस प्रकार के कार्य का उत्साह नहीं मिलता। कलीसिया के सदस्यों में नियुक्त सबसे अधिक दर उन बेकार लोगों की है जो प्रभु के लिए कार्य नहीं करते। कलीसिया की मण्डलियां संसार की सबसे बुरी कल्याणकारी अवस्था में हैं; बहुत से सदस्य अपनी जान पहचान के लोगों में सच्चाई की शिक्षा देने की पहल करने की इच्छा से इन्कार करके आत्मिक रूप से निर्भर हो गए हैं। किसी पड़ोसी या मित्र से सुसमाचार की बात करने का कोई पैसा नहीं लगता, परन्तु मसीही लोग दूसरों की आत्माओं में निवेश करने में नाकाम रहते हैं।

आज मसीहियत के मंच पर बहुत से निष्क्रिय नायक हैं। मैं प्राचीनों से पूछता हूं, कि यदि प्रेरितों 2 अध्याय वाली यरूशलेम की मण्डली की तरह संसार भर में केवल वही एक मण्डली हो जिसमें आप सेवा करते हैं, तो आप क्या करेंगे? यदि स्थानीय मण्डली सुसमाचार के प्रचार में ऐसे ही कार्य करती रहे तो संसार को मसीह के बारे में कैसे पता चलेगा? यदि मण्डली में हर कोई आपकी तरह ही आत्मा जीतने वाला हो, तो क्या हो? इस वर्ष मसीह के लिए कितनी आत्माएं जीती जाएंगी?

प्रचारको: यदि मण्डली के एक दर्जन सदस्य आत्मा जीतने के आपके कीर्तिमान की नकल करें, तो क्या अगले छह महीनों में मसीह में बहुत से बपतिस्मे हो पाएंगे?

डीकनो: यदि आप उन विशेष दायित्वों की सूची बनाएं जिन्हें आपने इस वर्ष स्थानीय कलीसिया के लिए पूरा किया, तो आपके कार्यों के परिणामस्वरूप प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सुसमाचार को ग्रहण करने वाली कितनी आत्माएं होंगी।

मण्डलियों के सदस्यो: क्या आप अपने आत्मिक थर्मामीटर के सम्बन्ध में ''प्रेम और चिन्ता का तापमान'' लेना चाहेंगे? पिछले साल क्या आपने खोई हुई आत्माओं के लिए इतनी चिन्ता की कि आप उनमें से किसी को सुसमाचार सिखाने लगे हों? क्या आप पीछे बैठकर देखने वाले उन निष्क्रिय सदस्यों व श्रोताओं में से एक दर्शक थे? क्या आपको प्रभु के लाभ के लिए कुछ किए बिना ही अपने भाइयों की संगति का लाभ मिल गया?

मण्डलियो: क्या आपने मसीह की शिक्षा से ''यरूशलेम'' (आपके अपने समाज, नगर, देश, राज्य या क्षेत्र) को भर दिया (प्रेरितों 5:28)? प्रेरितों के काम की पुस्तक में

लिखा है कि पहले मसीहियों ने ऐसा ही किया था। यदि आप वचन को फैला नहीं रहे, तो क्या कारण है?

बहुत सी मण्डलियां ''विश्वास के बुर्ज'' होते हुए ''वचन को (अपने आप में) पकड़े'' रखकर अपने लिए सुख पा लेती हैं। क्या ये मण्डलियां कभी प्रेरितों के काम के संदेश पर विचार करके यीशु के लिए ''सुसमाचार प्रचार के बुर्ज'' बनेंगी?

बहुत से लोग यह सोचकर अपने आपको मूर्ख बनाते हैं कि ''कलीसिया का काम'' केवल आराधना सभाओं और बाइबल क्लासों का आयोजन करना ही है, बहुत से पुरुषों तथा स्त्रियों का मानना है कि किसी क्लास में शिक्षा देने में सहायता करके या आराधना सभाओं की तैयारी में किसी प्रकार शामिल होकर कलीसिया की सेवा का उनका काम पूरा हो जाता है। ऐसी गतिविधि, बेशक अच्छी और सही है, परन्तु इससे कलीसिया का मुख्य मिशन पूरा नहीं हो जाता। कलीसिया की योजना केवल इकट्ठे होकर आराधना करने के लिए नहीं बल्कि प्रेम और भले कार्यों को उत्साहित करने के लिए बनाई गई थी (इब्रानियों 10:24, 25)। कलीसिया को ''सत्य का खम्भा, और नेव'' (1 तीमुथियुस 3:15) बनकर कार्य पूरा करना है। बहुत सी मण्डलियां ''सत्य के *तकिये*'' बन गई हैं; अर्थात, वे काम के समय सोती हैं। उन्हें सारे जगत में सुसमाचार को फैलाने के लिए ''सामर्थ के *खम्भे*'' बनने की आवश्यकता है।

यदि कोई व्यक्ति ऐसी घड़ी खरीदे जो सही समय न बताती हो, तो क्या होगा? आम तौर पर, वह व्यक्ति देखेगा कि जिस काम के लिए इसे खरीदा गया है, अर्थात समय देखने के लिए, उसे यह घड़ी मरम्मत के बाद सही समय बता सकती है या नहीं। यदि बार-बार मरम्मत कराने के बावजूद यह घड़ी सही समय नहीं देती, तो इसे फेंकना ही पड़ेगा।

फिर, उस मण्डली के बारे में जो सुसमाचार का प्रचार नहीं करती, क्या मानना चाहिए कि परमेश्वर उसके साथ क्या करेगा? क्या वह हमसे उससे अधिक प्रसन्न होगा जितना हम एक ख़राब घड़ी से होंगे? यदि कोई कलीसिया समाज में अपना प्रभाव नहीं छोड़ती, तो हो सकता है कि न्याय के दिन परमेश्वर उसे खराब घड़ी की तरह फेंक दे। याद रखें कि मण्डलियों को सामूहिक रूप में जिम्मेदार ठहराया गया था। उदाहरण के लिए, असिया की सात मण्डलियां, जिन्हें प्रभु ने प्रकाशितवाक्य 1 से 3 में स्वयं सम्बोधित किया।

परमेश्वर के पास किसी मण्डली के लिए इससे बड़ा मिशन और क्या हो सकता है? यही समय है कि हम स्थानीय समाजों में अपना प्रभाव छोड़ने और बाकी संसार में सुसमाचार प्रचार में सहायता करने के लिए अपने आत्मिक तापमान का पूरा इस्तेमाल करें।

यह समय रुक कर विचार करने का है कि मसीह में एक आत्मा को बपतिस्मा देने के लिए कितने सदस्यों की आवश्यकता है। पिछले पांच दशकों से अधिक समय में, कलीसियाओं का विकास सामान्यत: दस प्रतिशत के औसतन अनुपात से हुआ है; अर्थात, किसी विशेष वर्ष में आप एक कलीसिया से अपनी सदस्यता के दस प्रतिशत के बराबर लोगों का बपतिस्मा होने की अपेक्षा कर सकते हैं। (उदाहरण के लिए, अमेरिका में जिस मण्डली में तीन सौ सदस्य हैं सामान्यत: उसमें एक वर्ष में लगभग 30 बपतिस्मे

होंगे।) परन्तु, मण्डलियों में बहुत से बच्चे बड़े होते हैं जिनका बपतिस्मा किया जाता है, सो 10 प्रतिशत विकास दर का अर्थ जरूरी नहीं कि उस समाज के लोग बुराई और पाप को छोड़कर मसीह के आज्ञाकारी हो रहे हैं। उन परिवारों में शिक्षा देना जो कलीसिया से सम्बन्ध रखते हैं यकीनन ही सराहनीय कार्य है, परन्तु इतनी धीमी प्रतिशत दर सुसमाचार प्रचार के आलस की कहानी बताती है। शायद कलीसियाएं बाहर निकलने के भय और प्रभु के लिए दृढ़ होकर अपनी योग्यताओं को दफ़न कर रही हैं।

यदि स्थानीय समाजों से ''बाहर के'' लोगों को सिखाने और बपतिस्मा देने के सुसमाचार प्रचार के परिणामों को सही-सही बताया जाए तो अमेरिका की बहुत सी मण्डलियां स्तब्ध रह जाएंगी इसलिए, साल में सौ बपतिस्मे देने की बात कहने वाली मण्डलियां भी यह जानकर परेशान हो जाएंगी कि उन सौ में उनके अपने बच्चे कितने थे। यदि वे 10 प्रतिशत के अनुपात को भी बनाए रखें, तो विचार कीजिए कि कितने बपतिस्मे होंगे!

सारांश

प्रेरितों के काम की पुस्तक कार्य करने के लिए परमेश्वर की बुलाहट है। इसमें लिखा गया है कि पहली शताब्दी में किस प्रकार प्रेरितों ने वचन को माना, परन्तु यह प्रत्येक चेले के लिए कार्य करने की किसी भी समय बुलाहट है।

परमेश्वर को साहसी और कल्पना शक्ति वाले लोगों की आवश्यकता है। उसे वचनबद्ध और एकनिष्ठ साहसी लोगों की आवश्यकता है। प्रभु को ऐसे चेलों की आवश्यकता है जो संसार से न घबराएं। यीशु को ऐसे लोगों की आवश्यकता है जिनकी प्राथमिकताएं आत्मिक हों। उसे ऐसे लोगों की आवश्यकता है जिनके मन स्वर्ग की ओर लगे हों।

प्रेरितों के काम पहली शताब्दी के मसीहियों की कर्मशक्ति, कार्य, उद्यम, दृढ़ प्रयत्न और साहस के एक चमकदार आकाशदीप अर्थात चमकने वाली यादगार की तरह हैं। इस पुस्तक में दिखाया गया है कि यदि यीशु पृथ्वी पर रहता तो उसने क्या करना था। वह वैसा कुछ करता जैसा उसने पृथ्वी पर रहते हुए किया था अर्थात हर किसी के लिए और उसे सुनने वाले सब लोगों के लिए आशा और उद्धार लाता। ''परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर'' (प्रेरितों 2:33), अब यीशु अपने अनुयायियों से यह अपेक्षा करता है कि वे उसके कार्य को पूरा करें। वह हर शताब्दी में कलीसिया पर सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उन आत्माओं को जीतने वाली होने का भरोसा करता है जिनको उसके सुसमाचार व अनुग्रह के शुभ संदेश की आवश्यकता है।

प्रेरितों के काम नामक पुस्तक में उस महान आज्ञा के परिणाम भी दर्ज हैं जो अपने स्वर्गारोहण से पहले यीशु ने अपने चेलों को दी थी (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:44-47)। इसलिए किसी भी पीढ़ी के लोग जब इसे पढ़ते हैं, तो उनके लिए यह जानना आसान हो जाता है कि यीशु उनसे क्या करवाना चाहता है। यह जानना कठिन नहीं है कि *क्या करना है*: जाना, शिक्षा देना और प्रचार करना। यह जानना कठिन नहीं है

कि *कहां जाना है*: सब जातियों में। यह जानना कठिन नहीं है कि *क्या प्रचार करना है*: मन फिराव और पापों की क्षमा का सुसमाचार। यह जानना कठिन नहीं है कि *किस से सम्पर्क करें*: सारी सृष्टि के लोगों से। यह जानना कठिन नहीं है कि *विश्वासियों की क्या करने में सहायता की जाए*: मसीह में बपतिस्मा देने के लिए। यह जानना कठिन नहीं है कि *बपतिस्मा पाए हुए परिवर्तितों को क्या करने में सहायता दी जाए*: उन सभी आज्ञाओं का पालन करने के लिए जिनकी यीशु ने आज्ञा दी है।

आइए प्रेरितों के काम की पुस्तक के स्पष्ट संदेश की ओर कान लगाएं: यह मसीह से जुड़े हर एक व्यक्ति को कार्य के लिए एक बुलाहट है।